सुविचार

साधारणतया सतत संवाद, सफ़लता दिलाता है अर्थात्? समय पर सफ़लता प्राप्त करने के लिए पढ़ाई के बाद संवाद बेहद जरूरी है अन्यथा पढ़ाई अर्थहीन हैं

कुमार जितेन्द्र जीत मोकलसर (बालोतरा)

देखते ही देखते क्या से क्या हो गया?

राजनीति में समय से बड़ा कोई खिलाड़ी नहीं होता। जो सत्ता कल तक अजेय दिखाई दे रही थी, वह अचानक सवालों के घेरे में आ गई है। पिछले एक-डेढ़ महीने की घटनाओं ने भारतीय राजनीति में ऐसा माहौल पैदा किया है। जिन मुद्दों और रणनीतियों के सहारे भारतीय जनता पार्टी और केंद्र की मोदी सरकार ने पिछले एक दशक से अधिक समय तक अपनी राजनीतिक बढ़त बनाए रखी, आज कई मामलों में मोदी सरकार और भाजपा के लिए चुनौती बन रहे हैं। संसद का मानसून सत्र लगातार टकराव का मंच बना हुआ है। पहले पेपर लीक, फिर धार्मिक संस्थानों से जुड़ी कथित अनियमितताएं, छात्र आंदोलनों पर पुलिस कार्रवाई और सरकार की जवाबदेही जैसे मुद्दों पर विपक्ष संगठित रूप से हमलावर है। विपक्ष का आरोप है, सरकार महत्वपूर्ण सवालों से बचती नजर आ रही है। जबकि सत्ता पक्ष का कहना है, कि विपक्ष व्यवधान पैदा कर रहा है। इस राजनीतिक रस्साकशी ने सदन की कार्यवाही को प्रभावित किया है। सत्ता की सबसे बड़ी ताकत उसका आत्म विश्वास और जनविश्वास होता है। जब छोटे-छोटे मुद्दे भी बड़े जनआंदोलन का रूप लेने लगें, तब यह संकेत होता है, जनता के भीतर फैले असंतोष को प्रशासनिक उपायों तथा ताकत के बल पर नहीं रोका जा सकता है। किसी आंदोलन को दबाने के लिए बल प्रयोग, पुलिस कार्रवाई या प्रशासनिक कठोरता का सहारा लिया जाता है। उसके बाद भी विरोध लगातार फैलता जा रहा है, तो यह सरकार के लिए चेतावनी माना जाता है। हाल के उपचुनावों ने मोदी सरकार और भाजपा को राजनीतिक संदेश दिया है। चुनावी जीत और हार लोकतंत्र का सामान्य हिस्सा हैं। जब हार उन क्षेत्रों में होने लगे जिन्हें पार्टी का मजबूत गढ़ माना जाता रहा हो। तब संगठन के भीतर भी आत्ममंथन शुरू हो जाता है। टिकट वितरण, स्थानीय नेतृत्व और कार्यकर्ताओं की नाराज़गी जैसे प्रश्न खुलकर सामने आने लगते हैं। विपक्ष इन परिणामों को सत्ता के खिलाफ जनमत का संकेत बताने में जुटा है। विपक्ष ने आपदा में अवसर खोज लिया है। चंदा चोरी और दिल्ली में पुलिस बर्बरता के बाद गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ विपक्ष ने मोर्चा खोल दिया है। वर्तमान परिस्थितियों में विपक्ष डू और डाई की लड़ाई लड़ते हुए दिख रहा है। विपक्ष की रणनीति अब केवल संसद तक सीमित नहीं रही। सड़क से सदन तक एक साथ दबाव बनाने में विपक्ष सफल होता हुआ दिख रहा है। सरकार की ओर से सदन के नेता प्रधानमंत्री मोदी ओर वरिष्ठ नेतृत्व सदन में उपस्थित नहीं दिखाई देता है। इस कारण विपक्ष को राजनीतिक हमला तेज करने का अवसर मिल गया है। लोकतंत्र में केवल निर्णय लेना ही पर्याप्त नहीं होता, उन निर्णयों का प्रभावी बचाव करना और जनता के सामने पक्ष रखना भी उतना ही आवश्यक हो जाता है। राजनीति का पुराना सिद्धांत है, सत्ता के लिए सबसे बड़ा खतरा बाहरी विरोध नहीं, बल्कि आंतरिक असंतोष होता है। जब संगठन के भीतर टिकट, नेतृत्व और भविष्य को लेकर असमंजस बढ़ने लगे, तब विरोधी दलों को अतिरिक्त ताकत मिल जाती है। ऐसे समय में अनुशासन बनाए रखना और कार्यकर्ताओं का मनोबल ऊंचा रखना किसी भी दल के लिए सबसे बड़ी परीक्षा बन जाता है। हालांकि यह भी उतना ही सच है, भारतीय जनता पार्टी ने अतीत में कई कठिन राजनीतिक परिस्थितियों का मुकाबला किया है। इसलिए वर्तमान की घटनाओं के आधार पर अंतिम राजनीतिक निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी। लोकतंत्र में जनता का अंतिम फैसला चुनावी मैदान से सामने आता है। विपक्ष के लिए यह आवश्यक है, वह विरोध तक सीमित न रहे। जनता की समस्याओं को ही आंदोलन का रूप दे। वैकल्पिक आधार पर दृष्टि और ठोस नीति भी प्रस्तुत करे। इतना स्पष्ट है, देश की राजनीति तेजी से करवट ले रही है। सत्ता पक्ष के सामने कई ऐसी चुनौतियां सामने आई हैं, जिसका निराकरण आसानी से संभव नहीं है। सत्ता पक्ष के कमजोर होने से विपक्ष को नया उत्साह और ऊर्जा मिली है। जनता की अपेक्षाएं पहले से अधिक बढ़ गई हैं। आने वाले महीनों में यह तय होगा, जेन-जी, जेन-अल्फा, विपक्षी दलों और विभिन्न आरोपों के चलते भाजपा इन चुनौतियों का मुकाबला कर पाती है या नहीं। विपक्ष इस राजनीतिक माहौल को स्थायी जनसमर्थन में परिवर्तित कर पाएगा? लोकतंत्र का यही स्वभाव है, कोई भी राजनीतिक स्थिति स्थायी और लंबे समय तक प्रभावी नहीं होती है। समय का चक्र हर किसी की परीक्षा अवश्य लेता है। जिस तरह से एक के बाद एक चुनौतियां बढ़ती चली जा रही हैं। 2029 के लोकसभा चुनाव और 2047 तक शासन करने का जो ताना-बाना भाजपा ने बुन रखा था, वह ताना-बाना तेजी के साथ बिखर रहा है। ऐसा लगता है कि मकड़ी जो जाल दूसरों के लिए बुनती है। उसी जाल में मकड़ी फंस जाती है। उसे बाहर निकलने का कोई मौका नहीं मिलता है। उस जाल में फंसकर वह भी समाप्त हो जाती है। भारतीय जनता पार्टी संघ और मोदी सरकार के लिए यही सबसे बड़ी चुनौती है।

जेफ्री एप्स्टीन की 5000 करोड़ की संपत्ति का वारिस कौन

नाबालिग लड़कियों के यौन शोषण के आरोपी की दौलत पर 44 दावेदार

दुनिया के सबसे कुख्यात अपराधियों में गिने जाने वाले अमेरिकी कारोबारी जेफ्री एप्स्टीन की मौत को सात वर्ष हो चुके हैं, लेकिन उसकी लगभग 5000 करोड़ रुपए से अधिक की संपत्ति को लेकर विवाद अब भी जारी है। नाबालिग लड़कियों का यौन शोषण कराने और प्रभावशाली लोगों तक उन्हें पहुंचाने के आरोपों के कारण बदनाम एप्स्टीन ने अपने जीवन में अपार संपत्ति अर्जित की थी। अब सवाल यह है कि उसकी इस दौलत का असली वारिस कौन होगा। एप्स्टीन ने कभी विवाह नहीं किया था और उसकी कोई संतान भी नहीं थी। हालांकि उसके कई महिलाओं से संबंध रहे। इनमें घिसलेन मैक्सवेल और ईवा डुबिन के नाम प्रमुख हैं। घिसलेन मैक्सवेल पर आरोप है कि उसने एप्स्टीन के साथ मिलकर नाबालिग लड़कियों को फंसाने और उनके शोषण के नेटवर्क को चलाने में सक्रिय भूमिका निभाई। एप्स्टीन की गिरफ्तारी के बाद वह अमेरिका के बेडफोर्ड क्षेत्र में फर्जी पहचान के साथ रह रही थी, लेकिन 2 जुलाई, 2020 को एफबीआई ने उसे गिरफ्तार कर लिया। वह फिलहाल जेल में सजा काट रही है। ईवा डुबिन लंबे समय तक एप्स्टीन के साथ संबंध में रही, हालांकि बाद में उसने किसी अन्य व्यक्ति से विवाह कर लिया था। हाल के वर्षों में एप्स्टीन की एक और करीबी सहयोगी और प्रेमिका कारिना शुलियाक का नाम चर्चा में आया है। बेलारूस मूल की 37 वर्षीय डेंटिस्ट कारिना से एप्स्टीन की आखिरी बार फोन पर बातचीत हुई थी। आत्महत्या से दो दिन पहले तैयार की गई अपनी वसीयत में एप्स्टीन ने कारिना के लिए 30 करोड़ रुपए नकद, 33 कैरेट हीरे की अंगूठी, अन्य बहुमूल्य हीरे, पेरिस का एक आलीशान मकान तथा न्यू मैक्सिको स्थित फार्महाउस छोड़ने की इच्छा व्यक्त की थी। हालांकि उसकी पूरी संपत्ति कानूनी प्रक्रिया के तहत सील होने के कारण कारिना को यह संपत्ति मिलना आसान नहीं माना जा रहा है। एप्स्टीन की कुल संपत्ति में न्यूयार्क के अपर ईस्ट साइड स्थित सात मंजिला आलीशान हवेली, फ्लोरिडा के पाम बीच का बंगला, न्यू मैक्सिको का विशाल फार्महाउस, पेरिस का लक्जरी

अपार्टमेंट, 'लिटिल सेंट जेम्स' और 'ग्रेट सेंट जेम्स' नाम के दो निजी द्वीप, बोइंग 727 सहित कई निजी विमान, 20 से अधिक लग्जरी कारें, महंगी पेंटिंग्स, दुर्लभ प्राचीन वस्तुएं तथा भारह्मही मात्रा में नकदी शामिल थी। फिलहाल अदालत के आदेश पर एप्स्टीन की संपत्तियों का प्रबंधन उसके वकील डैरेन इंडिक और अकाउंटेंट रिचर्ड कान कर रहे हैं। अदालत ने दोनों को संपत्ति का प्रशासक नियुक्त किया है और मुकदमों से जुड़े सभी खर्च भी इसी संपत्ति से चुकाए जा रहे हैं। एप्स्टीन के अपराध उजागर होने के बाद बड़ी संख्या में पीड़ित महिलाएं सामने आईं। अदालत ने उसकी संपत्तियां बेचकर पीड़ितों को मुआवजा देने का आदेश दिया। 150 से अधिक पीड़ितों में से 140 से अधिक ने समझौते के तहत मुआवजा स्वीकार किया। उन्हें कुल लगभग 1200 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया। इसके अतिरिक्त करोड़ों डालर वकीलों की फीस और सरकारी करों के रूप में खर्च हुए। एप्स्टीन की संपत्ति पर कुल 44 लोगों ने दावा किया है। इनमें उसका सगा भाई मार्क एप्स्टीन तथा हार्वर्ड विश्वविद्यालय के गणित के एक प्रोफेसर का नाम भी शामिल है।ह्मह्म अंतिम निर्णय अदालत की प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही होगा। जेफ्री एप्स्टीन की 10 अगस्त, 2019 को न्यूयार्क की मेट्रोपॉलिटन करेक्शनल सेंटर जेल में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हुई थी। आधिकारिक तौर पर इसे आत्महत्या बताया गया। उसके करीबी सहयोगी और फ्रांसीसी माडलिंग एजेंट जीन लुक ब्रुनेल ने भी 19 फरवरी, 2022 को पेरिस की ला सांते जेल में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। ब्रुनेल पर आरोप था कि वह माडलिंग का झांसा देकर लड़कियों को एप्स्टीन तक पहुंचाता था। दिसंबर, 2020 में वह सेनेगल भागने की कोशिश के दौरान चार्ल्स डी गॉल एयरपोर्ट से गिरफ्तार हुआ था, लेकिन मुकदमा पूरा होने से पहले ही उसने अपनी जान दे दी। कारिना शुलियाक मूल रूप से बेलारूस की रहने वाली है। 21 वर्ष की उम्र में वह न्यूयार्क में एप्स्टीन के संपर्क में आई।

एप्स्टीन ने उसे कोलंबिया विश्वविद्यालय में डेंटल शिक्षा दिलाने में मदद की थी। अमेरिकी नागरिकता दिलाने के लिए उसने कारिना की समलैंगिक विवाह व्यवस्था भी कराई थी। कारिना एप्स्टीन के कई वित्तीय और प्रशासनिक कार्य संभालती थी, लेकिन अमेरिकी एजेंसियों ने उसे एप्स्टीन के अपराधों में सहभागी नहीं माना और उसके खिलाफ कोई आपराधिक मामला दर्ज नहीं किया। हाल तक वह ब्रुकलिन के एक छोटे क्लिनिक में गुप्त रूप से कार्य कर रही थी। वसीयत में उसका नाम सामने आने के बाद एक बार फिर वह अंतरराष्ट्रीय चर्चा का विषय बन गई है। अब सबकी नजर इस बात पर है कि अदालत अंततः एप्स्टीन की वसीयत को कितना कानूनी महत्व देती है और कारिना को उसमें लिखी गई संपत्ति मिलती है या नहीं।

अनिकेत सिंह
बड़ौदा-मो-8368681336

सावन अब पहले सा नहीं रहा

व्यंग्य
तीसरी आँख

सावन और प्रेम का रिश्ता वैसा ही है जैसा चाय और पकौड़ों का, संसद और हंगामे का, या फिर मोबाइल और चार्जर का। एक के बिना दूसरा अधूरा लगता है। सदियों से सावन आते ही प्रेमियों के दिलों में ऐसी हरियाली छा जाती थी कि पेड़ों पर झूले पड़ते थे और दिलों में फूल खिल जाते थे।

बादलों की गड़गड़ाहट प्रेम का बैकग्राउंड म्यूज़िक बन जाती थी और रिमझिम फुहारें प्रेम-पत्रों पर प्राकृतिक लैमिनेशन का काम करती थीं।

हिंदी फिल्म उद्योग ने भी सावन पर खूब भरोसा किया। जितने गीत सावन पर बने हैं, उतने शायद बजट पर नहीं बने। किसी फिल्म का नाम सावन, किसी का सावन को आने दो, तो कहीं आया सावन झूम के।

ऐसा लगता था कि बॉलीवुड का मौसम विभाग केवल एक ही ऋतु जानता था–सावन। नायक-नायिका को प्रेम में पड़ना हो तो निर्देशक बादलों को बुला लेता था।

जैसे ही पहली बूंद गिरती, दोनों पेड़ के इर्द-गिर्द नाचने लगते। दर्शक समझ जाते–अब प्रेम पक्का हो गया। सावन की असली जिम्मेदारी प्रेम की आग बुझाना नहीं, उसे और भड़काना रही है।

भीगते कपड़े, ठंडी हवा, झूला, कजरी और कोयल–ये सब मिलकर प्रेम का ऐसा सरकारी पैकेज तैयार करते थे कि दिल बिना किसी सब्सिडी के फिसल जाता था। उस दौर में प्रेमी मौसम विभाग की वेबसाइट नहीं देखते थे, सीधे आसमान देखते थे।

बादलों पर भी शायद मितव्ययिता लागू हो गई है। नतीजा यह है कि प्रेम की अग्नि पहले से अधिक धधक रही है, पर उसे ठंडा करने के लिए फुहारें उपलब्ध नहीं हैं। प्रेमी-प्रेमिका अब आसमान से कम और मौसम विभाग की भविष्यवाणी से ज़्यादा नाराज़ रहते हैं। लगता है आने वाले समय में प्रेमियों को वर्षा के लिए प्रार्थना-पत्र देना पड़ेगा और मौसम विभाग से 'नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट' लेना पड़ेगा।

लेकिन अब हालात बदल गए हैं। अल नीनो महोदय ने सावन की छुट्टियाँ कम कर दी हैं।

बादल आते हैं, फोटो खिंचवाते हैं और बिना बरसे लौट जाते हैं। मौसम विभाग रोज़ कहता है– 'आज भारी वर्षा की संभावना है।' शाम तक केवल संभावना ही बरसती है। उधर प्रेमियों की हालत भी कम दयनीय नहीं। पहले वे कहते थे– 'चलो, बारिश में मिलते हैं।' अब कहना पड़ता है– 'चलो, एसी कैफ़े में मिलते हैं, बाहर तो धूल उड़ रही है।' झूले पेड़ों पर कम और सोशल मीडिया की रील्स में ज़्यादा झूल रहे हैं। कजरी की जगह मोबाइल की रिंगटोन बज रही है। बेचारा सावन भी क्या करे! जलवायु परिवर्तन ने उसका बजट घटा दिया है।

बादलों पर भी शायद मितव्ययिता लागू हो गई है।

नतीजा यह है कि प्रेम की अग्नि पहले से अधिक धधक रही है, पर उसे ठंडा करने के लिए फुहारें उपलब्ध नहीं हैं।

प्रेमी-प्रेमिका अब आसमान से कम और मौसम विभाग की भविष्यवाणी से ज़्यादा नाराज़ रहते हैं। लगता है आने वाले समय में प्रेमियों को वर्षा के लिए प्रार्थना-पत्र देना पड़ेगा और मौसम विभाग से 'नो आॅब्जेक्शन सर्टिफिकेट' लेना पड़ेगा।

यदि यही हाल रहा, तो कवियों को भी अपनी पंक्तियाँ बदलनी पड़ेंगी– 'सावन आया था... पर रास्ता भूल गया।' सच तो यह है कि सावन आज भी प्रेम का महीना है, लेकिन अब प्रेमियों से ज़्यादा उसकी परीक्षा अल नीनो ले रहा है।

सावन बेचारा बरसना चाहता है, प्रेमी भी भीगना चाहते हैं, पर बीच में मौसम विज्ञान खड़ा मुस्कुरा रहा है।

–

ओमप्रकाश चोरमा
8, श्री राम कॉलोनी, अंकपात मार्ग
उज्जैन (मध्यप्रदेश)

कहानी

विकास का पोस्टर

शहर में ऑटो रिक्शा घूम-घूम कर घोषणा कर रहा था– 'नगरपालिका की ओर से अब विकास घर-घर पहुँचेगा। ' नुक्कड़ की गुमटी पर दोस्तों के साथ चाय की चुस्की लेते शर्मा जी मुस्कुराए– 'लगता है इस बार हमारे घर का पता भी मिल जाएगा। ' तभी वर्मा जी बोले– 'अरे मित्र, पता तो पिछली बार भी मिल गया था... बस रास्ता गड्ढों में खो गया था। ' पास बैठा सब्जी के ठेले वाला भी चर्चा में शामिल हो गया– 'साहब, हमारे शहर की सड़कें बड़ी ईमानदार हैं,

पहली बारिश में ही तैरना सिखा देती हैं। ' तभी बिजली के खंभे पर पोस्टर चिपकाने वाला लड़का बोला– 'अंकल, लगता है इस बार योजना बड़ी है। ' शर्मा जी कुर्ते से चश्मा साफ करते हुए बोले– 'हाँ बेटा, पोस्टर हर बार बड़ा ही होता है... पर विकास है कि छोटा पड़ जाता है। ' गुमटी पर खड़े अजनबी ने विश्वास से कहा– 'इस बार बदलाव तय है, साहब! 'वर्मा जी हँसे– 'सही है, हम भी हर बार तय हो जाते हैं। ' दो दिन बाद अख़बार में फोटो छपी– फीता कटा, ताली बजी, मुस्कानें बँटीं। तस्वीर में सड़क इतनी चमक रही थी कि शर्मा जी को लगा, शायद यह किसी और शहर की होगी।

तीसरे दिन वही सड़क फिर धँस गई। शर्मा जी ने अख़बार मोड़कर बगल में दबाया और बोले– 'विकास तो हमारी गली में आया था... पर गड्ढों ने उसे भी निगल लिया।

' वर्मा जी ने लंबी साँस लेते हुए कहा– 'घोषणाएँ ही स्थायी होती हैं, काम अस्थायी। ' सब्ज़ीवाला मुस्कुराया– 'साहब, हमारे शहर में सबसे मजबूत चीज़ 'वादे' हैं... जो कभी टूटते ही नहीं। ' खंभे पर लगा पोस्टर अब भी विकास की हामी भर रहा था।

दिलीप आचार्य सोमेश्वर बांसवाड़ा राज 9460022270

पीड़ित पति की पीएचडी शोध रिपोर्ट

व्यंग्य
वक्रासन

कई वर्षों की घरेलू तपस्या, पत्नी श्री की महाभारत, पत्नी जी के दिव्य प्रवचनों पर हुई गोपनीय बैठकों और स्वयं पतिदेव नाम के निरीह जंतु पर किए गए अनगिनत प्रयोगों के बाद आखिरकार मेरा शोध पूरा हो गया। विषय था– 'बरसात और बीवी का तुलनात्मक अध्ययन।' शोध इतना जोखिम भरा था कि विश्वविद्यालय ने डिग्री देने से पहले यह लिखवाया कि 'शोधकर्ता के विचारों से विश्वविद्यालय का कोई संबंध नहीं है।' शोध की शुरुआत मौसम विभाग और पत्नी, दोनों की भविष्यवाणियों से हुई। मौसम विभाग कहता है– 'आज हल्की बारिश की संभावना है।' फिर आधे घंटे बाद शहर नाव चलाने लायक हो जाता है। पत्नी कहती हैं– 'मैं बिल्कुल नाराज़ नहीं हूँ।' और पाँच मिनट बाद पति को पता चलता है कि घर में धारा 144 लागू हो चुकी है। बरसात से पहले बादल घिरते हैं, पत्नी के गुस्से से पहले भौंहें। घाघ पति आसमान नहीं, पत्नी का चेहरा देखकर मौसम का अनुमान लगाता है। अगर उन्होंने बिना वजह पूछा– 'कुछ भूल तो नहीं गए?' तो समझ लीजिए बिजली गिरने वाली है। अब यह याद करना पतिदेव की जिम्मेदारी है कि भूल क्या गए हैं। बरसात में आदमी छाता लेकर निकलता है। शादी के बाद पतिदेव 'हाँ जी ', 'आप सही कह रही हैं' और 'मुझसे गलती हो गई' नाम के तीन छाते लेकर चलता है, जो किसी काम के नहीं होते हैं और पत्नी तूफान के सामने उड़ जाते हैं। बरसात में सड़कें पानी से भर जाती हैं। घर में पत्नी के नाराज़ होने पर पति की आँखों से गंगा, जमुना, सरस्वती सहित विश्व की सभी नदियां लबालब होकर बहने लगती है; लेकिन पत्नी श्री पर इनका कोई असर नहीं होता है। फर्क सिर्फ इतना है कि नगर निगम का पानी दो दिन में उतर

जाता है, लेकिन पत्नी का मूड कब सामान्य होगा, इसका कोई भी फार्मूला आज तक नहीं मिला। शोध के दौरान एक और अद्भुत समानता मिली। बरसात में बिजली अक्सर चली जाती है। पत्नी के गुस्से में पति की अक्ल। दोनों ही परिस्थितियों में आदमी अंधेरे में टटोलता फिरता है कि आखिर गलती कहाँ हुई? बरसात में कीचड़ बहुत होता है। वैवाहिक जीवन में बहस का कीचड़ उससे भी ज्यादा होता है। जहां पैर फिसला नहीं कि चर्चा सीधे उस ऐतिहासिक घटना तक पहुँच जाती है जब शादी के तीसरे दिन आपने कहा था– 'नमक थोड़ा ज्यादा है।' पति भूल चुका होता है, लेकिन पत्नी की याददाश्त भारतीय पुरातत्व विभाग से भी मजबूत होती है। बरसात में पकौड़े खाने की इच्छा होती है। पत्नी का मूड अच्छा हो तो पति को भी लगता है कि जीवन अभी सुंदर है। लेकिन जैसे ही पत्नी पूछ दे– 'सच-सच बताना, मैं कैसी लग रही हूँ?' पति का दिमाग मोबाइल के कमजोर नेटवर्क की तरह 'सर्चिंग... सर्चिंग...' करने लगता है और अनुभवी पति लोग पत्नीश्री को राजकुमारी कहकर अपना पिंड छुड़ाते हैं। इस शोध का सबसे कठिन अध्याय था–तुलनात्मक निष्कर्ष। बरसात में छत टपकती है, पत्नी के गुस्से में पति। बरसात में नालियाँ जाम होती हैं, पत्नी के सामने पति की बोलती एकदम बंद! बरसात में लोग मौसम विभाग को कोसते हैं, और पति... खैर, पति सिर्फ मन ही मन सोचता है; ज़ुबान से कुछ नहीं कहता। विशेषज्ञ बताते हैं कि बरसात के बाद इंद्रधनुष निकलता है और पत्नी का गुस्सा शांत होने के बाद शॉपिंग और बाजार जाने का भारी अर्थ दंड! चेतावनी: इस शोध को पढ़ने के बाद यदि कोई पति इसे घर में ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने की भूल करता है, तो उसके परिणामों के लिए शोधकर्ता जिम्मेदार नहीं होगा। पिछली बार ऐसा करने वाले एक सज्जन पति आज भी सोफे पर पड़ा, सड़ा, खड़ा, अधमरा होकर शोध करने का विचार खूंटी पर टांक कर अपनी अंतिम घड़ी का इंतजार कर रहा है। ?

-- रामविलास जांगिड़,
18, उत्तम नगर, घूघरा,
अजमेर (305023)
राजस्थान